परम्परागत भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं प्रबन्धन में गुरु-शिष्य सम्बन्ध-एक अध्ययन

* डॉ. एन.एन. लांडगे

शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में यदि भारतीय परम्परा की ओर देखा जाय तो संपुर्ण विश्व से अलग हमारी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली रही है। जो तक्षशिला, नालंदा काशी, पल्लवी, आदि स्थानो में विश्वविद्यालय स्थापित किए गये। जहाँ शिक्षा की विविध विधाओं का प्रबन्ध था। शल्य-चिकित्सा तथा धर्नुविद्या शिक्षा उच्चकोटिक की मानी जाती थी। नालंदा के विश्वविद्यालय में चीनी यात्री हवेनत्सॉगने अध्ययन किया था। नालंदा का पुस्तकालय बहुत बडा था। जहाँ से शिष्य उच्च शिक्षा लेकर नयी पिढी संकृमप्र करते थे। लेकिन धीरे-धीरे शिक्षा व्यवस्था का रुप बदलते गया और अधुनिकता के ओर आकर्षित हो गया।

1.2 शोध पत्र शीर्षक :- परम्परागत भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं प्रबन्ध मे गुरू-शिष्य संबंध एक अध्ययन.

1.3 शोध पत्र समस्या का विधान :-परम्परागत भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं प्रबन्ध मे गुरू-शिष्य संबंधों का अध्ययन करता।

1.4 परिभाषिक संज्ञा :-1. गुरू-याने अध्यापक जो छात्रों को पढाता है। 2. शिष्य-जो गुरूसे ज्ञान प्राप्त करता है, एवं अध्ययन करनेवाला। 3. शिक्षा व्यवस्था एवं प्रबन्ध याने समाज तथा विकास हेतू बनाई हुई शिक्षा सुविधा।

1.5 उद्देश :- 1.परम्परागत भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं प्रबन्ध का अध्ययन करना। 2. परम्परागत भारतीय शिक्षा व्यवस्था में स्थित गुरू-शिष्य संबंधों का अध्ययन करना । 3. परम्परागत भारतीय शिक्षा में गुरू-शिष्य संबंधों का अध्ययन करना।

1.6 व्याप्ती और मर्यादा :-प्रस्तूत शोध पत्र भारतीय परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से प्राप्त गुरू-शिष्य संबंध पर आधारित है। वैदिक काल, रामायण महाभारत काल में मिलने वाले संदर्भ एवं आशय तक सिमित है।

1.7 आवश्यकता एवं महत्व :-प्राचीन, वैदिक, रामायण तथा महाभारत काल में शिक्षा व्यवस्था एवं प्रबंध मे गुरू-शिष्य संबंध महत्वपुर्ण रहे है। योग, ब्रम्हचर्य, संस्कार, संयम, सत्य, तप इत्यादी गुणों को विकास गुरूद्वारा होता था।गुरू-शिष्य एक साथ आश्रमरहकर शिष्य गुरू सानिध्य में अनुभूति से शिक्षा लेता था। इस व्यवस्था को गुरू गृह अर्थात गुरूकूल इस नाम से जाना जाता था। उस व्यवस्था का परिचय कारण आवश्यक है। यह दुरी, बदलाव कम करना तथा साथ-साथ गुरू-शिष्य के जन कल्याण संबंधों का बढावा देने हेतू प्रस्तूत शोध कार्य महत्वपूर्ण है।

1.8 प्रस्तूत शोध कार्यों के लिए आशय विश्लेषण पध्दती का अवलंब किया है।

2. वैदिक काल, रामायण काल, महाभारत काल में मिलनेवाले शिक्षा व्यवस्था संबंधी तथा गुरू-शिष्य संबंध को अध्ययन किया है। और प्रस्तूत शोध कार्यों में उसीका विविचन किया है।

2.1 परम्परागत भारतीय शिक्षा व्यवस्था:-हम भारतीय है। हमे भारतीय परम्परा को नयी दृष्टीसे देखना है। हमारी अपनी प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था को नये ढंग से जोडकर नयी पिढी से परिचय करवाना है। इसलिए हमे हमारी परम्परागत शिक्षा व्यवस्था, गुरू-शिष्य संबंध इनकी महत्व वैशिष्ट्यो से परिचित रहना है।

2.2 शिक्षा की विविध उत्पत्तिया व व्यवस्थाए तथा उनका स्वरूप:-शिक्षा की परिभाषा वैदिक काल, रामायण तथा महाभारत काल मे अध्यात्मिक विकास सर्वोच माना था। इसलिए तैत्तिरिय उपनिषद में स्वाध्याय याने अध्ययन का महत्व बताया है। अध्ययन अध्यापन याने-

स्वाध्याय प्रवचने च। सत्य च स्वाध्याय प्रवचने च।
तप च स्वाध्याय प्रवचने च। दमश्य स्वाध्याय प्रवचने च।

याने सत्य, तप, दमश्च स्वाध्याय द्वारा ही सफल होते है। इसका मतलब विद्या एवं शिक्षा व्यवस्था से शिष्य को इन्ही गुणोंसे परिपूर्ण बनाना है। इसलिए अध्ययन अध्यापन के लिए शिक्षा व्यस्था की स्थापना हुई है।

विद्या का महत्व बताते हुए बृहन्नता पुराण में उल्लेख मिलता है।

नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति सत्यसमं तप: ।

याने विद्या के समान दुसरा नेत्र नही है। इसी तरह चाणक्य निती में:-

विद्या मोक्षकारी प्रोक्ता तृष्णा वैतरणी नदी ।।

इसका अर्थ है विद्या ही मोक्ष की जननी है। तृष्णा वैतरणा नदी के समान नरक मे ले जानेवाली है। इसी तरह अध्ययन शिक्ष, विनय, यह शिक्षा से संबंधी कुछ संज्ञा वेदकाल मे मिलती है। शिक्षा और बुध्दि संबंध मे कुछ सूत्र ऐसे मिलते है-

बिना शिक्षा से बुध्दि दुर्बल होती है। भगवान व्यास ने बुध्दि को जन्मान्तर साधना का फल बनाया है। मात्र साधना शिक्षा के शिवा प्राप्त नही होती है। महाभारत (सभापर्व) में कहा गया है की, - शील वृत्त फलो अतम। अर्थात शिक्षा का लक्ष्य चरित्र गठज और पुण्य कर्म -सम्पादन है।

विद्या विहीन : पशु : याने विद्या के सिवा मनुष्य पशु समान है। उपरी सब चर्चा से विद्या याने क्या है। और मनुष्य के लिए विद्या का महत्व क्यॉ । इसका परिचय मिलता है। इसी कारण भारतीय परंपरा मे गुरू-शिष्य के विकास के कारण गुरू-गृह/गुरूकुल ऐसी शिक्षा व्यवस्थाएँ बनायी गयी।

2.3 गुरूकुल एक आदर्श शिक्षा व्यवस्था:-भारतीय परंपरा के नुसार शिष्य को गुरूगृही जाकर विद्या संपादन करणी पडती थी। (वार्षिक वाक्याधिकरण 366) मे कहाँ है।-

वेदस्वाध्ययेन सर्व गरोरध्यनपूर्वकम्।
वेदाध्ययन बाच्यत्वादधुताध्ययन।

अर्थात वेदाध्ययन परंपराप्राप्त विधी है, सर्वमान्य सिध्दांत है। गुरू के सानिध्य मे गुरू शुश्रुषापूर्वक वेदों का ज्ञान प्राप्त करना, भारतीय शिक्षा पध्दती है। इसी कारण राजा हो रंक इनको विद्याध्ययन के लिए गुरूगृही जाना पडता था। गुरूगृह एक शिक्षा संस्था है। उत्तर वैदिक काल (उपनिषद) मे शिक्षा तीन प्रकार की थी। श्रवण, मनन निजध्यास यह तीन पध्दतीयों के द्वारा शिष्य अध्ययन करता था।

गुरूगृह में शिष्य उपनयन संस्कार से लेकर समावर्तन अर्थात दिक्षान्तक विद्यार्थी गुरू-गृह पर ही विद्याध्ययन करता करता था। गुरू-गृह में उषाकाल में गुरू जागरण के पहले उठना और गुरू-शयन पश्चात सोना अनिवार्य तथा नियमित था। गुरूगृह मे विविध कलाओं की शिक्षा दि जाती थी। 64 कलाएँ पढाई जाती थी। ऐसा वैदिक काल में उल्लेख मिलता है। रामायण में वसिष्ट द्वारा राम को सैन्य शिक्षा देने का उल्लेख मिलता है।

पिता दशरथो दष्टो ब्रहमा लोकाधियो
यथा ते चाणि मनुज व्याघ्रा।
वैदिकाध्ययन रत: पितृ शुश्रृषणरता
धनुर्वेदय मिष्टता।

अर्थात रामायण मे दशरथ के पुत्रो को विद्यार्थी काल में सैनिक शिक्षा प्राप्त करने का उल्लेख है। उसके साथ-साथ गुरू वशिष्ट द्वारा शिक्षा देने का उल्लेख मिलता है।

उपनीता वसिष्ठेन सर्वविद्याविशारदा:।
धनुर्धेय च निरता : सर्वशार्स्थवेदित:।
प्रभवौ सर्वविधान सवज्ञौ जगदीश्वरो।
अथो गुरूकुले वासमिच्छान्तावुप जग्मतु:।

* साने गुरुजी विद्याप्रबोधिनी सर्व समावेशक शिक्षण शास्त्र महाविद्यालय, खिरोदा (महाराष्ट्र)

शिक्षा संस्था का स्वरूप -

गुरुगृह	उच्चशिक्षा व्याख्यान	सम्मेलन
गुरु के साथ पढना।	एवं चर्चा	राजा संपुर्ण देश के
गुरु शिष्य का नियमित संपर्क था।	वाद–विवाद	विद्वानों ऋषियों तथा
पारिवारिक जीवन अनुभव	आदिद्वारा अध्ययन	अध्यात्मिक व मानसिक
सेवा करना		नेताओं को आमंत्रित
पशु चराना		कराते थे दार्शनिक
यज्ञाग्निक प्रज्वलित रखना।		जातियों का पुरस्कार
प्रश्नोत्तरो द्वारा अध्ययन		भी दिये जाते थे।
		विदुषी स्त्रियों का भी
		सहभाग रहा है।

काश्य सांदीपानी नम्न ध्यवन्ती पुरवतीनम।

अहोरामे श्चतु: षष्ट्या संमतौ तावमी:कला।

याने रामायण, महाभारत काल में गुरूगृह शिक्षा व्यवस्था महत्वपुर्ण रही है। गुरू संज्ञा अर्थ तथा महत्व:-गुरू यह शब्द बडा व्यापक है। गुरू शब्द का अर्थ एवं उत्पित्ती के चिन्ह प्राचीन काल की भाष्यों एवं टीकाओं मे अंर्तनिदित है जैसे-

गुरू उद्यमते। गुरू सत्यर्थ प्रर्वतपती शिष्यभूइंति। शिष्य को सत्पथ पर प्रावृत्त एवं परिचालित करता है, अत: वह गुरू कहा जाता है।

गुशब्द स्तवन्धकारे स्याद् रूशब्दस्तान्नि रोधके।

अंधकार निरोधित्वाद् गुरूरित्यात्याभिधियते।। (गुरू गीता)

अर्थात गु शब्द का अर्थ है अन्धकार और रू शब्द का अर्थ है उसका निरोध या विनाश करनेवाला। इस प्रकार अंधकार का निरोधक होने से गुरू पद वाच्य है।

गुरू का महत्व:- कठोपनिषद में गुरू का महत्व इस तरह बताया जैसे-- गुरू पूर्ण ज्ञानी, सर्वद्रष्टा होना चाहिए।/-गुरू शिष्य को अन्तर्चक्षु प्रदान करता था।/-विद्यादान केवल पुत्र या शिष्य को देता था।/शिष्य - आचार्य कुलवासी होना।/- गुरू के लिए भिक्षान्न मांगकर लाना।/-निर्धन, धनवान, राजकुमार तथा क्षत्रिय सभी एक समान रहना।/-विनय ब्रम्हचर्य, विद्याध्ययन करनेवाला शिष्य होता था।

ढहशु ीर्वि ळङ्गह ळी वशीर्ळींशव षीीिं ींहश रीीङ्गीळीं ुीर्वि हळीहूर. ख्रीं ळी ीशश्रींशर्वं ीं ींहश ईीरहारलहरीूर.

गुरू-शिष्य संबंध-भारतीय परम्परा के नुसार गुरू-शिष्य संबंध अध्यात्मिक थे। गुरू और चेला इस प्रकार का संबंध होता था। उपनिषदानुसार गुरू शिष्य संबंध ऐसे बताये जाते है नजदिक बैठकर अध्यात्मिक शिक्षक पढाता था। उदाहरण के तौर पर श्रीमद्‌भागवत के नुसार कृपण और अर्जुन का संबंध। रामायण में राम और हनुमान संबंध गुरू-शिष्य संबंध मूलभुत अंग है।

गुरू-शिष्य संबंधों की वैशिष्ट्ये:- 1. शिक्षक विद्यार्थी संबंधों का निर्माण 2. ध्यान और चातुर्यद्वारा संबंधो का निर्माण 3. गुरुदक्षिणा : शिष्य गुरू को दक्षिणा देता था। कही बार जो शिष्य की जरीए गुरुदक्षिणा देता था, उसका स्विकार किया जाता था। कभी-कभी गुरुदक्षिणा स्वरूप मे फलों का आहार भी दिया जाता था। कही बार गुरू दक्षिणा स्वरूप मे भयंकर भी रहता था। जैसे-गुरू द्रोणाचार्य और एकलव्य जहाँ गुरू अपने शिष्य अंगुठा मांगा था। अर्थात गुरू को बहुत महत्व था। गुरू को परमेश्वर माना है। भारत मे गुरूओं की परंपरा विख्यात है। व्यास, द्रोणाचार्य, वसिष्ठ, विश्वामित्र, सांदीपनी, कण्डव इत्यादी।

गुरू-शिष्य संबंधों के प्रकार:-अद्वैता वेदांत मे गुरू के लिए आचार संहिता दि हुई। गुरू के लिए कुछ आवश्यक गुणों के वर्णन किया है। इसके बारे मे मुंडका उपनिषद में लिखा है।

1. श्रोर्तिया 2. ब्रह्मनिष्ठा 3. श्रृती परंपरा में गुरू-शिष्य संबंधो का बडा महत्व रहा है। 4. शक्ति पत परम्परा गुरू शिष्य को पवित्रतासे जागृकतासे ज्ञान देता था। ऐसी अध्यात्मिक शिष्य परिवारको अध्यात्मिक कहते थे। यह कुला परिवार होता था। यह परिवार खून के संबंधों पर निर्भर नही था। यह समान ज्ञान के लोगों का परिवार था। 5. भक्तियोग सही गुरू शिष्य संबंधो का उदाहरण है। 6. प्राप्ती का तत्व था अहंकार का नाश करना। संस्कृत मे नम्र होना। साने गुरूजी ने अपने भारतीय संस्कृति नामक पुस्तक मे गुरूशिष्य संबंध बताते हुए कहा है कि गुरू और शिष्य एक दुसरे से कुछ विना बोले ही शंकाओं समाधान हो जाता था। यह तभी मुमकिन है की, जब गुरू और शिष्य के संबंध प्रगाढ हो। गुरू-शिष्य के बीच पिता-पुत्र जैसा व्यवहार होता था। गुरू की शुश्रुसा, गौर.चारण, जंगलसे लकडी लाना, अग्नी प्रज्वलित रखना आदि कार्योसे पता चलता है कि गुरू-शिष्य संबंध में पारिवारीकता थी। आज के परिदृश्यमें देखा जाय तो, गुरू एक मात्र हेतू है धर्नाजन करना। गुरू शिक्षा बेचकर आजीविका को आधार बना रहा है। यह ही भी है, या नही यह हमारी बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था ही समक्षा सकती है। दुसरी तरफ शिष्य भी अपनी येन केन प्रकारेण अच्छी जीवन शैली बनाने के लिए प्रयास कर रहे है। ग्लोबल परिस्थिती में अगर भारतीय शिक्षा पध्दती की ऐसी स्थिती रही तो हमारी विश्वविख्यात गुरू-शिष्य परंपरा आज भी किताबों मे है, किताबों मे ही रहेगी। लेकिन इन बदलते परिस्थितीयों मे भी कुछ दीप याने संस्था अपनी भारतीय शिक्षा परंपरा से जुडकर आधुनिकता के दौड में स्थान बनायी हुई है।ऐसेही कुछ संस्था का अध्ययन किया। मुलाखत द्वारा शिक्षा व्यवस्था, गुरू व्यवहार, शिष्यों को दि जानेवाली परंपरागत शिक्षा, उपक्रमों एवं पध्दती के बारे में जानकारी हासिल की। तो कुछ निष्कर्ष ऐसे मिले है। 1. आज गुरूकुल जैसी मगर आधुनिकता का स्विकार करके प्रार्थना, गीता पठन, सहजीवन, पवित्रता जैसे उपक्रमो द्वारा गुरू-शिष्य साथ रहकर कक्षा में अध्ययन करते है। 2. अंग्रेजी माध्यम का स्विकार किया है, मगर अंग्रेजी के साथ शिष्यों को संस्कार मंत्र पढाते है। यह अच्छा समन्वय है। 3. गुरू-शिष्यों का व्यवहार, समय के साथ बदला हुआ जरूर है। खान-पान, अध्ययन में पितापुत्र संबंध नही है, मगर दोस्ताना दिखाई देता है। सह नाववतु और सह नौ भुनक्तु अनुभव दिलाते है।

सारांश:- बदलते हुए शिक्षा व्यवस्था का ध्यान भारतीय परंपरागत शिक्षा, गुरू-शिष्य संबंध तथा कर्तव्यपरायण ऋषि परंपराके ओर खिंचना आवश्यक है। नयी पिढी के साथ जुडकर भारतीय परंपरागत शिक्षा को जीवित रखना है, तथा ग्लोबलायझेशन मे विश्व में अपनी शिक्षा का महत्व बनाए रखना है। हमारी भारतीय परंपरागत गुरू शिष्य संप्रदाय तथा उनके तत्वों का मार्गदर्शन योग, ध्यान, चिकित्सा, एवं दैनिक शिक्षा आचारों का एक पिढी से दुसरी पिढीतक संक्रमित करना है।